• परंपरा...

मंदिर में नगे पैर

भारत में मंदिर सिर्फ पूजा का स्थान नहीं होते, बल्कि यह हमारे जीवन से जुड़ी परंपराओं, भावनाओं और आस्था का गहरा प्रतीक हैं। जब हम किसी मंदिर में प्रवेश करते हैं, तो वहां का वातावरण, घंटियों की आवाज, धूप और अगरबत्ती की खुशबू, मंत्रों की गूंज और शांति से भरा वातावरण हमारी आत्मा को एक अलग ही सुकून देता है। इसी अनुभव का एक खास हिस्सा होता है नंगे पैर मंदिर में चलना। यह परंपरा केवल एक धार्मिक नियम नहीं, बल्कि इसके पीछे कई गहरी वजहें और लाभ छुपे होते हैं। मंदिर में नंगे पैर चलने से व्यक्ति का मन और शरीर दोनों शुद्ध होते हैं और वह ईश्वर के और करीब पहुंचता है।

हिंदू धर्म अनेक परंपराओं और रीति-रिवाजों वाला एक धर्म है। वैदिक युग से चली आ रही कई प्रथाएं आज भी भारत में प्रचलित है। नंगे पैर मंदिर में प्रवेश करना हिंदुओ की एक प्रथा है। हालांकि अन्य धर्मों के लोग और जापानी लोग भी किसी पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले अपने जूते या चप्पल उतार देते हैं।

कहते हैं कि मंदिर पवित्रता वाले स्थान हैं। इसलिए एक भक्त को इसकी पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए। माना जाता है कि जब आप बिना जूते के मंदिर में प्रवेश करते हैं, तो आप आसानी से दिव्य शक्ति से जुड़ सकते हैं. यह देवी देवताओं से आशीर्वाद पाने का एक तरीका भी है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार चमड़े के जूते पहनकर मंदिर में प्रवेश करना देवताओं का अनादर करने के समान है। इसलिए ऐसा नहीं करना चाहिए। इसी कारण से लोगों को मंदिर में प्रवेश करते समय चमड़े की बेल्ट और पर्स उतार देने पड़ते हैं।

अधिकांश मंदिरों के फर्श पर हल्दी, चंदन और सिंदूर का लेप लगाया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार, ये आपके स्वास्थ्य को बढ़ाने वाला स्त्रोत हैं। जब आप बिना जूते-चप्पल पहने मंदिर के फर्श पर प्रवेश करते हैं तो आप इन तत्वों के लाभों को ग्रहण कर सकते हैं।

मान्यताओं के अनुसार मंदिर एक ऐसा स्थान हैं जो आपको मानसिक शांति प्रदान करती है. जब आप नंगे पैर प्रवेश करते हैं, तो सकारात्मक ऊर्जा आपके पैरों के माध्यम से आपके शरीर में प्रवेश करती है. ये आपके मन को शांत रखने में मदद करती है। नंगे पैर मंदिर में प्रवेश करने के कुछ महत्व इस प्रकार हैं कि यह एक अत्यंत प्रासंगिक हिन्दू परंपरा है. देवी-देवताओं के प्रति सम्मान और आदर दर्शाने के लिए इसका पालन करना चाहिए।

• रविवार को...

सूर्य उपासना

हिंदू धर्म और ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को बहुत ही अहम हिस्सा और केंद्र बिंदु माना है। ज्योतिष शास्त्र में जहां सूर्यदेव को सभी ग्रहों का राजा माना गया है, वहीं धार्मिक नजरिए से सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं। हिंदू धर्म में सूर्यदेव के लिए रविवार का दिन समर्पित है और इस दिन भगवान सूर्य की पूजा करने का विशेष महत्व होता है। सूर्य ऊर्जा, सफलता और सकारात्मकता के एक बहुत ही खास केंद्र बिंदु हैं। वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिन जातकों की कुंडली में सूर्य कमजोर स्थिति में होते हैं उनके जीवन में मान-सम्मान और यश की कमी रहती है। वहीं अगर कुंडली में सूर्य मजबूत स्थिति में हैं तो जातक के जीवन में परेशानियां बहुत ही कम आती है और सौभाग्य में वृद्धि होती है। रविवार के दिन सूर्यदेव की कृपा पाने के लिए कई तरह के उपाय, दान-पुण्य और पूजा-पाठ किया जाता है।

सूर्य उपासना के लिए रविवार का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन कई चीजों का दान करना विशेष फलदायी साबित होता है। रविवार के दिन विशेष रूप से सूर्य से संबंधित चीजें जैसे तांबे का बर्तन, पीले या लाल वस्त्र, गेहूं, गुड़, माणिक्य, लाल चंदन आदि का दान करें। अपनी श्रद्धानुसार इन चीजों में से किसी भी चीज का दान किया जा सकता है। इससे कुंडली में सूर्य दोष दूर हो जाते हैं और धन, ऐश्वर्य और मान-सम्मान की प्राप्ति होती है।

वैसे तो सूर्यदेव को हर एक दिन सुबह जल अर्पित करने का महत्व होता है, लेकिन रविवार के दिन सूर्य देव की उपासना और जल अर्पित करने से विशेष लाभ होता है। रविवार के दिन प्रात:काल नहाकर उगते हुए सूर्य को जल देने के लिए तांबे के लोटे में जल, लाल चन्दन, चावल, लाल फूल और कुश डालकर प्रसन्न मन से सूर्य की ओर मुख करके कलश को छाती के बीचों-बीच लाकर सूर्य मंत्र का जप करते हुए जल की धारा धीरे-धीरे प्रवाहित कर भगवान सूर्य को अर्घ्य देकर लाल पुष्प अर्पित करने चाहिए।

सूर्य देव की उपासना में आदित्य हृदय स्तोत्र का विशेष महत्व होता है। रविवार के दिन आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ जीवन के अनेक कष्टों का एकमात्र निवारण है। इसके नियमित पाठ से मानसिक कष्ट, हृदय रोग, तनाव, शत्रु कष्ट और असफलताओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

सूर्यदेव की उपासना में रविवार के दिन व्रत रखने का विशेष महत्व होता है। बढ़िया स्वास्थ्य, मान-सम्मान, धन-संपदा के लिए रविवार के दिन व्रत रखना और कथा सुनने से हर एक मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। रविवार के दिन सूर्य का व्रत करने से काया निरोगी रहती है, साथ ही अशुभ फल भी शुभ फल में बदल जाते है। अगर इस दिन व्रत कथा सुनी जाए तो इससे मनुष्य की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर

काशी बुग्गा वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का इतिहास करीब 600 साल पुराना बताया जाता है। इसका निर्माण विजयनगर साम्राज्य के समय हुआ था। स्थानीय मान्यता के अनुसार, इस मंदिर की स्थापना भगवान विष्णु के एक दिव्य स्वरूप के रूप में हुई थी, जो स्वयं यहां प्रकट हुए थे।

मंदिर की दीवारों पर उस समय के सुंदर शिलालेख और नक्काशी आज भी मौजूद हैं, जो इसके गौरवशाली इतिहास की झलक दिखाते हैं...

आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में स्थित काशी बुग्गा वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर दक्षिण भारत के सबसे प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मंदिरों में से एक माना जाता है। यह मंदिर भगवान वेंकटेश्वर को समर्पित है, जिन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। यहां हर एकादशी पर देशभर से हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। कहा जाता है कि जो भक्त सच्चे मन से भगवान वेंकटेश्वर की पूजा करता है, उसके जीवन में सुख, समृद्धि और शांति आती है। काशी बुग्गा वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का इतिहास करीब 600 साल पुराना बताया जाता है। इसका निर्माण विजयनगर साम्राज्य के समय हुआ था। स्थानीय मान्यता के अनुसार, इस मंदिर की स्थापना भगवान विष्णु के एक दिव्य स्वरूप के रूप में हुई थी, जो स्वयं यहां प्रकट हुए थे. मंदिर की दीवारों पर उस समय के सुंदर शिलालेख और नक्काशी आज भी मौजूद हैं, जो इसके गौरवशाली इतिहास की झलक दिखाते हैं।

यह मंदिर तिरुपति बालाजी मंदिर की तरह ही पूजा पद्धति और परंपराओं का पालन करता है। इसी कारण इसे 'पूर्व का तिरुपति' भी कहा जाता है। यहां भगवान वेंकटेश्वर के साथ देवी पद्मावती और भगवान विष्णु के अन्य रूपों की भी पूजा की जाती है। भक्तों का मानना है कि यहां दर्शन करने से वही पुण्य प्राप्त होता है, जो तिरुपति बालाजी में दर्शन करने से मिलता है।

मंदिर की बनावट प्राचीन द्रविड़ शैली में है, जिसमें पत्थर की नक्काशी और ऊंचे गोपुरम (मुख्य द्वार) इसकी पहचान हैं। मंदिर के गर्भगृह में भगवान वेंकटेश्वर की काले पत्थर से बनी मूर्ति स्थापित है, जो अत्यंत भव्य और शांत रूप में दिखाई देती है। मंदिर के चारों ओर बने छोटे-छोटे मंडपों और स्तंभों पर देवी-देवताओं की सुंदर मूर्तियां उकेरी गई हैं।

काशी बुग्गा वेंकटेश्वर मंदिर का विशेष महत्व एकादशी, ब्रह्मोत्सव और वैकुंठ एकादशी जैसे पर्वों पर होता है। इन दिनों मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ होती है। लोग मानते हैं कि एकादशी के दिन भगवान वेंकटेश्वर की पूजा करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्रद्धालु नागावली नदी में स्नान करने के बाद मंदिर जाकर पूजा करते हैं, जिसे बेहद शुभ माना गया है।

मंदिर के पास बहने वाली नागावली नदी को भी पवित्र माना जाता है। कहा जाता है कि इस नदी में स्नान कर भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन करने से व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और सौभाग्य बढ़ता है। स्थानीय लोककथाओं में यह भी बताया गया है कि भगवान विष्णु ने इसी स्थान पर भक्तों को दर्शन दिए थे।

यहां सालभर कई धार्मिक उत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन ब्रह्मोत्सव और एकादशी सबसे खास माने जाते हैं। इस दौरान मंदिर में दीप सज्जा, भक्ति संगीत, विशेष आरती और प्रसाद वितरण होता है। दूर-दूर से आए श्रद्धालु इस भव्य आयोजन का हिस्सा बनते है। काशी बुग्गा वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर न सिर्फ एक धार्मिक स्थल है, बल्कि आस्था, इतिहास और संस्कृति का संगम भी है। यह मंदिर इस बात की मिसाल है कि कैसे सदियों पुरानी परंपराएं आज भी लोगों के विश्वास का केंद्र बनी हुई हैं। यहां पहुंचने वाले हर भक्त को न सिर्फ आध्यात्मिक शांति मिलती है बल्कि दक्षिण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव भी होता है।

यह मंदिर न सिर्फ श्रीकाकुलम की पहचान है, बल्कि यह बताता है कि श्रद्धा जब इतिहास से जुड़ती है, तो वह हर युग में अमर हो जाती है।

■ पं. नित्यानंद

• रिश्तों में मिठास...

शुक्रवार को सफेद रंग

हिंदू धर्म में हर दिन किसी न देवी-देवता को समर्पित किया गया है। सप्ताह का हर दिन किसी किसी ग्रह से भी जुड़ा होता है। सफेद रंग शुक्र से जुड़ा हुआ है। शुक्रवार को सफेद रंग के कपड़े पहनने से शुक्र ग्रह प्रसन्न होते हैं और उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। सफेद रंग रिश्तों में मिठास लाता है। शुक्रवार को सफेद कपड़े पहनने से संबंधों में सुधार होता है। पति-पत्नी के बीच मतभेद समाप्त होते हैं। इसके अलावा, शुक्रवार को इस रंग के वस्त्र पहनने से आर्थिक समस्याएं भी कम होती हैं। साथ ही पुरानी मान्यताओं के अनुसार, शुक्रवार के दिन सफेद कपड़े पहनने से तनाव कम होता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि सफेद रंग को शांति, पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। सफेद रंग मन को शांत करता है, जिससे जीवन में तनाव कम होता है। इतना ही नहीं यह ध्यान और योग के लिए भी एक अच्छा रंग अच्छा रंग माना जाता है।

• भगवान गणेश...

मान्यता है कि गणेश जी की पूजा करने से व्यक्ति के जीवन में आ रही सभी बाधाएं दूर होने लगती हैं और उसके अटके हुए काम बनने लगते हैं। अगर बुधवार के दिन श्री गणेश जी की पूजा में शमी पत्र यानी शमी की पत्तियां चढ़ाया जाए, तो व्यक्ति की करियर-कारोबार या जीवन में आ रही बाधाएं दूर हो सकती है या बिगड़े और अटके काम बनने लगते हैं। अगर किसी की कुंडली में बुध ग्रह कमजोर हो, तो बुधवार के दिन गणेश जी की पूजा करने ग्रह दोष कम होता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित